अष्टकर्म से रहित मुक्ति-लक्ष्मी के घर श्री सिद्ध नमूँ।
सम्यक्त्वादि गुणों से संयुत, तिन्हें ध्यान धर कर्म वमूँ॥६॥
जिनवर की भक्ति से होते, विघ्न समूह अन्त जानो।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो, विष निर्विष होता मानो॥७॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

मैं प्रशस्त मंगल गानों से, युक्त जिनालय माँहि यजूँ।
जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य सजूँ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

(तांटक)

स्याद्वाद वाणी के नायक, श्री जिन को मैं नमन कराय।
चार अनंत चतुष्टयधारी, तीन जगत के ईश मनाय॥
मूलसंघ के सम्यग्दृष्टि, उनके पुण्य कमावन काज।
करूँ जिनेश्वर की यह पूजा, धन्य भाग्य है मेरा आज॥१॥
तीन लोक के गुरु जिन-पुंगव, महिमा सुन्दर उदित हुई।
सहज प्रकाशमयी दृग-ज्योति, जग-जन के हित मुदित हुई॥
समवसरण का अद्भुत वैभव, ललित प्रसन्न करी शोभा।
जग-जन का कल्याण करे अरु, क्षेम कुशल हो मन लोभा॥२॥
निर्मल बोध सुधा सम प्रकटा, स्व-पर विवेक करावनहार।
तीन लोक में प्रथित हुआ जो, वस्तु त्रिजग प्रकटावनहार॥
ऐसा केवलज्ञान करे, कल्याण सभी जगतीतल का।
उसकी पूजा रचूँ आज मैं, कर्म बोझ करने हलका॥३॥
द्रव्य-शुद्धि अरु भाव-शुद्धि, दोनों विधि का अवलंबन कर।
करूँ यथार्थ पुरुष की पूजा, मन-वच-तन एकत्रित कर॥
पुरुष-पुराण जिनेश्वर अर्हन्, एकमात्र वस्तू का स्थान।
उसकी केवल ज्ञान वह्नि में, करूँ समस्त पुण्य आह्वान॥४॥

ॐ यज्ञविधि प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।